विजयादशमी

विजयादशमी का पावन पर्व हमें यह संदेश देता है कि जीवन में वास्तविक विजय केवल बाहरी चुनौतियों और परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने में ही नहीं, बल्कि अपने भीतर की बुराइयों, नकारात्मक विचारों, अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या और दुर्बलताओं पर नियंत्रण स्थापित करने में निहित है। यह पर्व हमें आत्ममंथन करने, अपनी कमियों को पहचानने और उन्हें दूर करते हुए एक सजग, संवेदनशील एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति बनने की प्रेरणा देता है। सत्य, सदाचार, विवेक, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा ऐसे शाश्वत मूल्य हैं, जो व्यक्ति के चरित्र को ऊँचाई प्रदान करते हैं तथा समाज को प्रगति, समरसता और समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर करते हैं।

जीवन की कठिनाइयाँ चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हों, धैर्य, दृढ़ इच्छाशक्ति और सकारात्मक दृष्टिकोण के बल पर उनका सामना किया जा सकता है। सच्ची सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं होती, बल्कि दूसरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने और समाज के प्रति अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने में भी निहित होती है। विजयादशमी हमें प्रेरित करती है कि हम व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर सामूहिक हित, सामाजिक सद्भाव और राष्ट्र की प्रगति के लिए निरंतर प्रयास करें। दूसरों के प्रति सम्मान एवं संवेदनशीलता, अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पण और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति समानता एवं न्याय का भाव हम अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएं तथा हम ऐसे समाज के निर्माण में योगदान दें, जहाँ प्रेम, शांति, सद्भाव और समानता का वास हो।

सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिवार और प्रिय विद्यार्थियों को विजयादशमी के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ। यह मंगलमय अवसर आपके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और सफलता लेकर आए। आपका भविष्य उज्ज्वल एवं मंगलमय बने।

आचार्य राज कुमार मित्तल
कुलपति
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ।